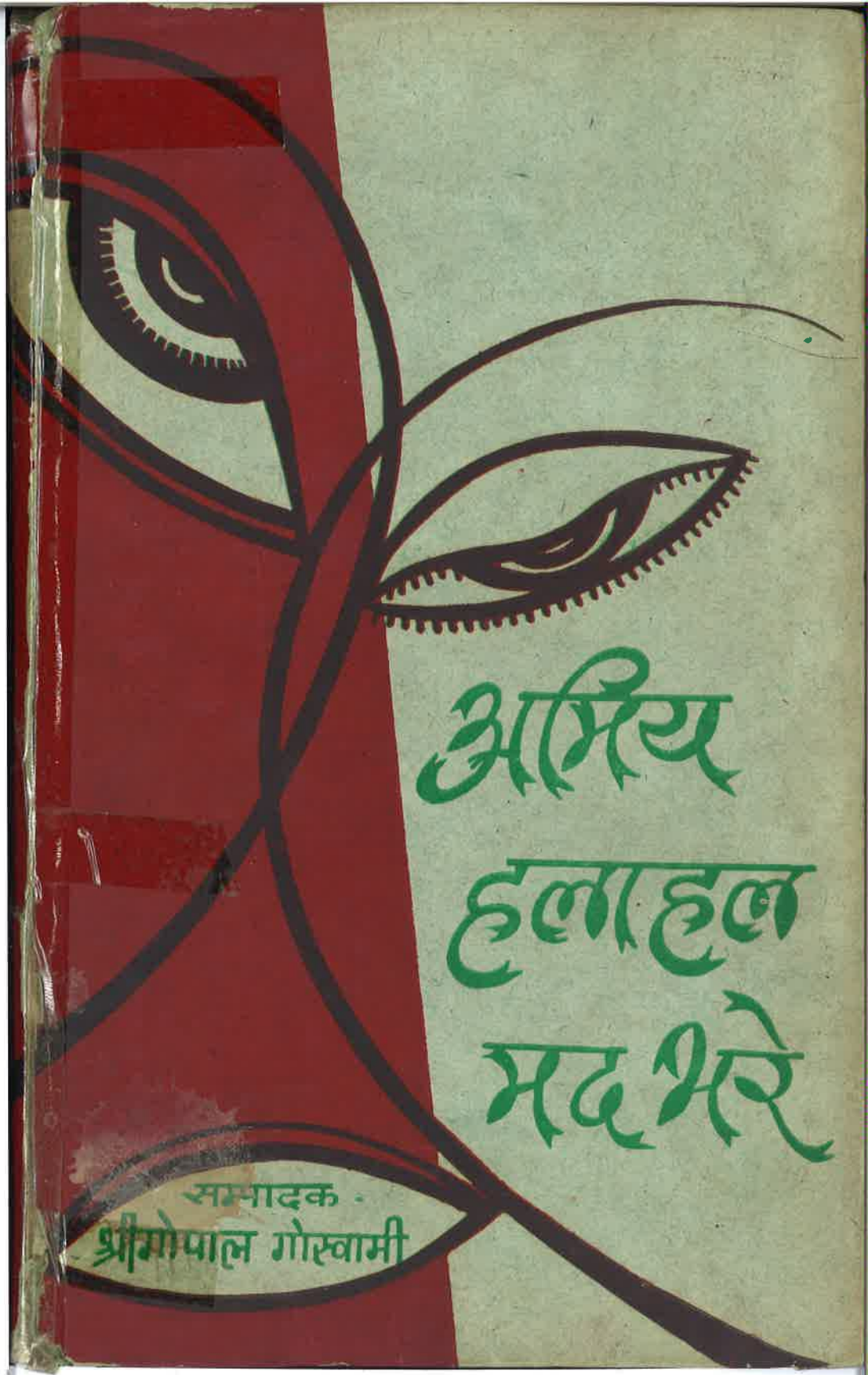
अमिय
हलाहल
मद भरे
सम्पादक
श्रीगोपाल गोस्वामी

आभार

"अमिय हलाहल मदभरे" को विज्ञ पाठकों को सौंपते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है। ग्रन्थ के निर्माण में दोहों के प्राचीन ग्रन्थों और दोहाकारों का बड़ा योग रहा है, विशेषतः अनूप संस्कृत लाइब्रेरी के "दोहा रत्नाकर" का। अतः हम इन सभी ज्ञात-अज्ञात दोहाकारों और कवियों के प्रति अपना आभार प्रदर्शित करते हैं। श्री अनूप संस्कृत लाइब्रेरी के अधिकारियों के प्रति हम अपना आभार प्रकट करना नहीं भूल सकते जिन्होंने हमारे शोध-सहायक श्री गोस्वामी को अध्ययन की सभी सुविधाएं प्रदान कीं।

ग्रन्थ माला के प्रकाशन में राज्य शिक्षाधिकारी श्री जगन्नाथ सिंह जी मेहता और कुंवर श्री जसवन्त सिंह जी का अतुलनीय सहयोग रहा है। हम किन शब्दों में उनका आभार प्रकट करें।

मूलचन्द पारीक
रजिस्ट्रार
भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर

दो शब्द

श्री श्रीगोपाल जी गोस्वामी के "अमिय हलाहल मदभरे" ग्रन्थ को प्रकाशित करते हुए हमें बड़ी खुशी हो रही है। बड़े परिश्रम से यह ग्रन्थ तैयार किया गया है। आंखों के विभिन्न व्यापारों और उनकी भाव भंगिमाओं पर ऐसे चुभते और मनमोहक दोहों का इतना बड़ा संकलन अन्यत्र नहीं मिलता। यह अपने ढंग का पहला संकलन है।

काव्य और सौन्दर्य-शास्त्र में आंखों की बनावट, उनकी भंगिमा और उनके विभिन्न व्यापारों का बड़ा महत्व है। प्राचीन काल से ही कलाकारों और कवियों का ध्यान इस ओर गया है। सभी कवियों ने चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान, आंखों की पवित्रता और उनके "अनबोले बोल" की करामात पर अपनी लेखनी के दो प्रसून चढ़ाये हैं। परम्परागत साहित्य-धारा की इस विधा का संपूर्ण निदर्शन कराने का श्रेय संपादक को है। वर्गीकरण के द्वारा यह काम बड़ी खूबी से किया गया है। हमें विश्वास है कि यह ग्रन्थ अधिक से अधिक हाथों में पहुंचेगा और प्रत्येक साहित्य-प्रेमी पाठक इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ के अध्ययन से लाभ उठायेगा। इत्यलम्।

सत्यनारायण पारीक

अध्यक्ष

भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर

प्रकाशित ग्रन्थ

- गोगाजी चौहान री राजस्थानी गाथा
  —श्री चन्द्रदान चारण एम. ए., साहित्यरत्न
- रासो साहित्य और पृथ्वीराज रासो
  —श्री नरोत्तमदास स्वामी एम. ए.
- अमिय हलाहल मदभरे
  —श्री श्रीगोपाल गोस्वामी
- प्राचीन ऐतिहासिक बातां भाग १
  —श्री नरोत्तमदास स्वामी एम. ए.
- प्राचीन काव्यों की रूप-परम्परा
  —श्री अगरचन्द नाहटा

आगामी प्रकाशन

- अलखिया सम्प्रदाय
  —श्री चन्द्रदान चारण एम. ए., साहित्यरत्न
- जांभाजी री बाणी
  —श्री सूर्यशंकर पारीक
- नागदमण
  —श्री मूलचन्द 'प्राणेश', साहित्यरत्न
- संत परिचयी
  —श्री श्रीगोपाल गोस्वामी
- श्री करनी चरित्र
  —श्री चन्द्रदान चारण एम. ए., साहित्यरत्न
- रणमल्ल छंद
  —श्री मूलचन्द 'प्राणेश', साहित्यरत्न
- राजस्थानी वातां
  —श्री नरोत्तमदास स्वामी एम. ए.

भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान

बीकानेर [राजस्थान]